आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 02 | उदयपुर सोमवार 01 फरवरी 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

भगवान ऋषभदेव 72 कलाओं के प्रथम उपदेशक थे

- निहाल अजमेरा-

भीलवाड़ा के निहाल अजमेरा नृत्य, संगीत, कठपुतली आदि कलाक्षेत्र के संजीदा कलाकार हैं। भीलवाड़ा में गैर समारोह आयोजित कर धूमिल होती इस कला को पुनर्जीवन संरक्षण दिया। इस सम्बन्धी कलाकारों तथा कला गोष्ठियां आयोजित कर उनका बहुमान सम्मान किया। संगीत कला केन्द्र नामक कला संगीत संस्था की स्थापना कर अनेक गुणीजनों का सान्निध्य लेते युवक-युवतियों को वादन, गायन, नर्तन का प्रशिक्षण दिया। पड़चितेरों द्वारा निर्मित पड़चित्रण परम्परा को पोषित करते इस कला को विश्व बाजार तक पहुंचाया तथा धर्मगुरुओं का आशीर्वाद ले धार्मिक पट्ट तैयार किये और उनका प्रभावी प्रदर्शन किया। निहालजी ने कठपुतलियों की प्रस्तुति में भी कमाल दिखाया। भवाई नृत्य का प्रभाव ग्रहण कर 108 कलशों की चकरी द्वारा सिर पर बेलेंस बनाकर पांच वर्ष पूर्व 82 वर्ष की उम्र में अकल्पनीय प्रस्तुति द्वारा गीनीज बुक में वर्ल्ड रेकार्ड कायम किया।

हमारे देश की वैभवशाली लोककलाओं में राजस्थान की फड़ पेंटिंग-चित्रगाथा अब सम्पूर्ण कलाजगत में अपना विशिष्ट स्थान बना चुकी है। यह फड़ अधिकतर लोकदेवता पाबूजी तथा देवनारायण के जीवन-प्रसंगों पर चित्रित की जाती है। भीलवाड़ा व शाहपुरा में जोशी परिवार पीढ़ियों से यह कार्य कररहे हैं। उनमें से कुछ बन्धुओं को राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय एवं पद्मश्री जैसे सम्मान भी प्राप्त हो चुके हैं।

लोकशिक्षण में फड़कला की उपयोगिता देखते हुए जैन तीर्थंकरों की चित्रगाथा के चित्रांकन का विचार कर मैंने जोशी बन्धुओं से यह कार्य सम्पन्न करवाया। इसके लिए मुझे आचार्य विद्यानन्दजी महाराज का मंगल आशीर्वाद मिला।

इस फड़ के प्रारम्भ में महाराजा नाभिराय, मुरझाये हुए कल्पवृक्ष व मध्य में महाराजा ऋषभदेव अपनी पुत्रियों ब्राह्मी व सुन्दरी को अक्षर व अंकविद्या का प्रशिक्षण देते हुए, ऋषभदेव

का वैराग्य तथा पंचमुष्ठी केशलुंचन, अक्षय तृतीया का आहारदान एवं तपस्यारत आदिप्रभु के चित्र अंकन हैं।

नीचे : षट्कर्म-असिमसि, कृषि, वाणिज्य, विद्या, गायन,, वादन, नृत्य आदि शिल्पकलाएं चित्रित हैं।

जीवन जीने की कलाओं में शिल्प व गंधर्व कलाओं को बहुत महत्वपूर्ण माना गया। फड़ की बाउण्ड्री में अनेकान्त का प्रतीक चिन्ह ही व भी तथा परस्परोपग्रहो जीवानाम् चित्रित है। ऊपर व नीचे साईड में 72 कलाएं अंकित हैं। चारों कोनों पर ओम्, ह्मीं, धर्मचक्र व मंगल स्वस्तिक अंकित है। धर्मस्थलों के साथ ही श्रावकों व कलाप्रेमियों के घरों व कार्यालयों में शोभित होने तथा उपहार देने के लिए भी यह चित्रफलक अत्यन्त मनोरम, प्रेरणादायी, सात्विक एवं मंगलदायी शुभशकुनी कलाकृति है।

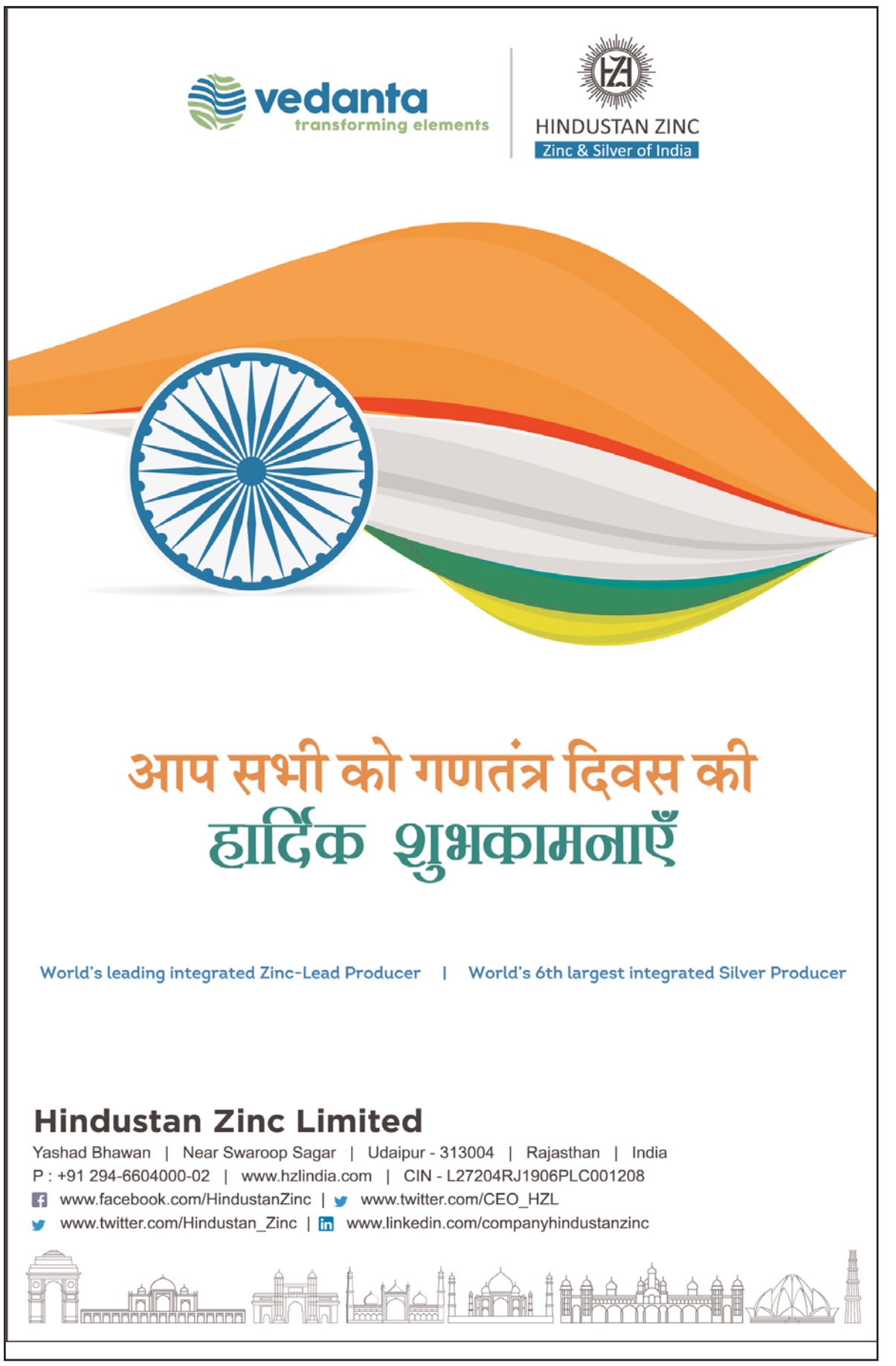

पोथीखाना

'मैं ब्राह्मण मैं शूद्र' धारदार कलम का असरदार व्यक्तित्व

'मैं ब्राह्मण मैं शूद्र' नामक पोथी एक जुझारू तथा संघर्षशील प्रखर पत्रकार बजरंगसिंह पांथी लिखित धारदार कलम का असरदार व्यक्तित्व लिए पारदर्शी जीवनवृतांत है।

कठोर संघर्षशील और निष्ठावादी गांधीवादी चालचलन के रहते पांथी ने खद्दर पहनने और पारदर्शी सादा जीवन जीने का व्रत लिया किन्तु जगह-जगह उन्हें निराशा लगने के कारण वे जयपुर से उदयपुर और कोटा, बीकानेर अपना कर्मक्षेत्र बनाते अन्त में बूंदी जाकर बसेरा किया किन्तु अपने सिद्धान्तों पर अपना जीवन जीना कायम रखा।

इस बीच उन्होंने जो कुछ देखा भोगा उसकी निर्भयता के साथ असहमति व्यक्त करते अनेक लाभ-लोभों को ठोकर मार जो जांचा-परखा उसको इस 118 पृष्ठीय पुस्तक में जहां तगड़ी धार दी है वहां उन मुखौटाधारियों को धूलधोया करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी है।

उदयपुर पांथीजी का पसंदीदा शहर रहने के कारण वे यहां सर्वाधिक रहे। सभी तपके के सर्वाधिक लोगों से उनके सम्पर्क-सम्बन्ध रहे। सर्वाधिक पत्रकारिता भी यहीं की। सर्वाधिक समाज एवं संस्थासेवी उनके परिचय में रहे और सर्वाधिक लेखक-साहित्यकार में मेरा भी उनसे सर्वाधिक सम्पर्क रहा जो अब भी बना हुआ है। इस पोथी में भी उदयपुर सर्वाधिक रूप में उनकी कलम का कलाधर बना। चंद नमूने देखिये-

(1) उदयपुर संस्थाओं का शहर बन चुका था। विद्याभवन, विद्यापीठ सहित यहां ऐसी दर्जनों संस्थाएं थीं जो सत्ता राजनीति से हटकर समग्र जनजागरण और सेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रही थीं।

(2) निकट से देखने के बाद मैंने पाया कि या तो लोग संस्थाओं को मठाधीश की तरह हांक रहे हैं या फिर शुद्ध दुकानों की तरह चला रहे हैं। (पृष्ठ- 26)

(3) पन्द्रह अगस्त के सम्पादक श्री चन्द्रेश व्यास वरिष्ठ कांग्रेसी होने के बावजूद एक पत्रकार पहले थे।

(4) निरंजननाथ आचार्य और जनार्दनराय नागर का एक छोटा धड़ा सुखाड़िया विरोधी था और भीतर ही भीतर वर्मा-सुखाड़िया की जड़ें काटने में लगा रहता था। (पृष्ठ-27)

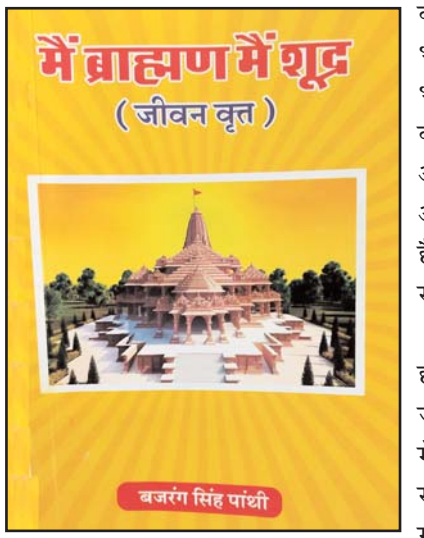

(5) उदयपुर व्यक्तियों से अधिक संस्थाओं का शहर है। यहां संचालित अखाड़े, अखाड़ेबाज और दादा टाइप लोग आचार्य की राजनीति के खास मोहरे हुआ करते थे।

(6) जनुभाई के कांग्रेसी होने के बावजूद विरोध की राजनीति करने वाले संघ, जनसंघ, कम्युनिस्ट और समाजवादी दलों से जुड़े लोग भी विद्यापीठ में स्वतंत्रता का अनुभव करते थे। (पृष्ठ-42)

(7) बलवंतसिंह मेहता, चौधरी नरेन्द्रपालसिंह, क्रान्तिकारी आदिवासी नेता मोतीलाल तेजावत भी यहां थे। लोकविधाओं के क्षेत्र में देवीलाल सामर का योगदान अतुलनीय था। (पृष्ठ-47)

(8) सुखाड़िया शालीन राजनीति की मिसाल थे वहीं खाओ और खाने दो की सत्ता राजनीति के भी पक्षधर थे। (पृष्ठ-45)

यह तो ठीक पर उन्होंने नेताओं के अलावा खाऊ अधिकारियों और फर्जी नेता तक को नहीं छोड़ा। वे कोई भी बात कहने में सदा निर्भय रहे। सबके सामने सत्यासत्य को चौड़े करने की सामर्थ्य कितने लोगों में होती है। देखिये-

(1) धर्म के नाम पर धंधा करने वालों की इस देश में कभी नहीं रही है। सच्चा धर्म तो केवल सेवाधर्म है। उदयपुर में भूरेलाल बया नाम के गांधीवादी मंत्री हुआ करते थे। स्वदेशी भावना पर उनके भाषण के बाद मैंने कहा- बया साहब, आपके सुपुत्र तो अमेरिका में पढ़ रहे हैं। क्या इसी का नाम स्वदेश प्रेम है?

शिक्षामंत्री हरिभाऊ उपाध्याय जब साबरमती आश्रम में पत्नी व पुत्री के साथ रहते थे, गांधीजी ने जब उनकी पुत्री के पांव में चांदी की पाजेब देखी तो कहा, तुमने अभी से अपनी बेटी के पांवों में चांदी की बेड़ियां डालदीं।

उपाध्यायजी ने कहा, भविष्य में हम आजीवन सादगी निभायेंगे पर एकबार जब उनका भाषण पूरा हुआ तो पांथी से रहा नहीं गया। बोले, आप अपने दोनों हाथों में हीरा-मोती जड़ी सोने की पूरी आठ अंगूठियां पहने हुए हैं। हम पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा। मेरी धृष्टता पर मंत्रीजी ने कुछ कहा तो नहीं मगर उनके मुंह का जायका जरूर खराब हो गया था। (पृष्ठ-55)

ऐसे ही अजमेर में उन्होंने खादिम की धर्म की पोल खोली। बीकानेर में रघुवीर दयाल गोगल तथा बूंदी के ब्रजसुन्दर शर्मा जैसे मंत्रियों तक को नहीं छोड़ा।

बूंदी में तो एक जज साहब तक को भरी अदालत में दृढ़ता दिखाते उन्होंने कहा, मैं भ्रष्टाचार और अन्याय के सामने खामोश नहीं रह सकता। इसके लिए बड़ी से बड़ी कीमत चुकाने और मरते दम तक लड़ने को तैयार हूं। भरी अदालत में मेरे तीखे तेवर देखकर जज साहब चुपके से उठकर चैम्बर में जाकर बैठ गये। (पृष्ठ-97) यही नहीं, उन्होंने पत्रकारों तथा साहित्यकारों को भी नहीं बख्शा और आज भी बूंदी में दैनिक राजमार्ग निकालते हुए भी वे निर्द्वन्द्व हैं।

खद्दर पहनने का व्रत लिया तो उसका दृढ़ता से पालन किया। यहां तक कि जब दूल्हा बनकर विवाह करने गये तब भी उनकी पोशाक खद्दर की थी पर उदयपुर जिले के फतहनगर में स्टेशन से उतरकर जब वे पैदल जा रहे थे तब किसी अनजान व्यक्ति ने जोर से चिल्लाकर कहा, वो देखो खादीधारी चोर जा रहा है। यह सुन उन्हें बड़ी ठेस लगी।

उन्होंने अनुभव किया कि खद्दरधारी भ्रष्ट नेताओं ने गांधी और स्वदेशी को कहीं का नहीं रखा। देशभक्ति की पहचान खादी अब भ्रष्टों की ढाल बन गई और नेता शब्द गाली बन गया है। उस दिन के बाद उन्होंने खादी पहनना बन्द कर दिया। (पृष्ठ-92)

ऐसे अनेक जीवनानुभवों को पांथीजी ने अपनी जीवनी में अपनी पिटारी खोलकर रख दिये हैं। हां, उन्होंने जगह-जगह अपनी माता और खासकर पत्नी को अपने जीवन निर्माण की कस्तूरबा-सी सहयोगी माना। पत्नी की स्मृति में उन्होंने श्रीराज स्मृति प्रकाशन घर, राजनिकेतन तथा दैनिक राजमार्ग बूंदी से प्रकाशित किया है। पुस्तक के मूल्य के लिए लिखा है- 300 रूपये में पुस्तक लें और परोपकार में खर्च कर दें। **-म. भा.**

अपनी संस्कृति अपना देश

दास्तान पूरवज कुत्ते की

हमारे एक मित्र ओंकारश्री ने एक कुत्ता पाला मगर अप्रेल 1978 को जब डॉ. महेंद्र भानावत की जमकर उनसे चर्चा हुई तो एक नई शोध का बोध हुआ। कहने लगे कि कुत्ता पाला नहीं है पर वह एक पहेली बन गया है। किसी को कहें तो सुनने वाले ही यह अर्थ दे बैठे कि क्या गजब का आदमी है जो अपने पूरवज को कुत्ता कह रहा है पर है यही हकीकत कि वह कुत्ता हमारा ही पूरवज है।

मान्यता है कि मरने के बाद जिस जूण (योनि) में व्यक्ति जाता है उसका घर की औरतें तुरन्त पता लगा लेती हैं। चौरासी लाख जीवों का संसार कहा गया है जिसमें मनुष्य भटकता रहता है। यदि कोई कुत्ता बन जाय तो आश्चर्य ही क्या। मेरी इस बात पर उन्हें गर्मी में कुल्फी सी राहत मिली और वे अपने उस कुत्ते के लच्छन सुनाने लग गये।

कहने लगे कि जबसे कुत्ता आया है तब से सारे ही मांगलिक कार्य पूरे हुए जा रहे हैं। वह कुत्ता बड़ा विलक्षणी है। रात को सबके साथ बीच में बिस्तर पर सोता है। तकिया लगाता है। ओढ़ता है पर मुंह खुला रखता है। बहुत छोटा था तब कुत्तों के झंझेड़े में आ गया सो उधर गुजरते मेरा बच्चा उठा लाया। उसी दिन किसी पूरवज की बरसी थी। हम भोजन पर बैठे ही थे कि ये आ धमके सो उन्हें ही सबसे पहले खीर-पूड़ी का भोजन कराया गया। कुत्ते महाराज ने बकायदा दण्डवत कर भोजन कर लिया। ग्यारस तथा पूर्णिमा को यह भाई व्रत रखता है। रात को ठीक बारह बजे बाद व्रत खोलता है। इस दिन हम उसके पास में दूध में रोटी मिलाकर रख देते हैं।

उन्होंने बताया कि घर की यह पूरी चौकसी करता है। सबके साथ भोजन करता है। कहीं से कोई मेहमान आता है तो कहने पर उनके घर पहुंचा आता है। बीच में अन्य कुत्ते मिलते हैं तो यह उन्हें लांघता हुआ निडर बना चला जाता है और कुशलपूर्वक लौट आता है। घर में स्वत: ही सब लोग इसे पूरवज का ही रूप मानकर वैसा ही व्यवहार करते हैं।

एक दिन तो एक सज्जन ने कुत्ते को देखते ही कह दिया कि यह कुत्ता इस घर का पूरवज है। इसकी अच्छी तरह देखभाल करना। कभी इसे लात मत मारना और न लकड़ी से इसे पीटना ही। इससे घरवालों की कुत्ते के प्रति चली आ रही मान्यता सबल हुई और दिन प्रतिदिन कुत्ते के प्रति उनका ममता भाव बढ़ता गया।

कुत्ते को एक-दो बार भगाया भी मगर वह घूम-फिरकर वापस यहीं आ गया। कुछ न रखेंगे तो वह भूखा रह जायगा मगर इधर-उधर मुंह नहीं डालेगा। कुत्ता बड़ा साणा है। समझू है। पूरा घरबारी और व्यावहारिक है। केवल देह से कुत्ता है बाकी तो पूरा मानव स्वभावी है। उसके रहते कोई आओ, कोई जाओ मगर क्या मजाल कि कोई रत्ती राई भर चीज उठा कर ले जाये।

कुत्ते का यह किस्सा जिस-जिसने भी सुना उसने यही कहा कि सर्प-पूरवज से तो कुत्ता-पूरवज अच्छा जिससे डर लगे न कोई तकलीफ हो। रक्षा भी करे और मंगल-मांगल्य भी दे। ऐसा कुत्ता उन सारे कुत्तों से कई गुना अच्छा होता है जहां 'कुत्ते से सावधान' वाली तख्ती देखकर बाहर का मनुष्य भीतर के मनुष्य से मिलने से भय खाता है और नहीं मिलने की स्थिति में उसे कुत्तामय करार कर चलता बनता है।

यहां कोई प्लेट नहीं। कुत्ता सबका साथ निभाता है। किसी की पिंडी नहीं पकड़ता। न भौंकता काटता है। चुपचाप बैठा रहकर अपने दिन काटता है। **-डॉ. तुक्तक भानावत**

GMCH
GEETANJALI HOSPITAL
HEALTH IS HAPPINESS

NABH
PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE
ACCREDITED

गीतांजली हॉस्पिटल, उदयपुर

द्वारा आयोजित

नि:शुल्क
प्रसव सुविधा

15 जनवरी से 15 मार्च 2021

गीतांजली हॉस्पिटल में गर्भवती महिलाओं को मिलने वाली नि:शुल्क सुविधाएं

आऊटडोर (OPD)

- परामर्श
- जांच (रक्त, पेशाब, अल्ट्रा सोनोग्राफी इत्यादि)

इनडोर (IPD)

- सामान्य वार्ड में भर्ती
- दवाईयां व अन्य उपयोगी सामग्री
- जांच (रक्त, पेशाब, अल्ट्रा सोनोग्राफी इत्यादि)
- सामान्य व सिजेरियन प्रसव
- रक्त सुविधा
- भोजन सुविधा

24x7 सुरक्षित प्रसव हेतु कुशल, अनुभवी स्त्री रोग विशेषज्ञों सहित नवजात रोग विशेषज्ञों का दल एवं उच्चस्तरीय उपकरणों से सुसज्जित नवजात रोग नर्सरी (NICU, PICU)

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

9829 040 199
9784 000 127

*नियम एवं शर्तें लागू

विशेष : शिविर के दौरान पंजीकृत होने वाली गर्भवती महिलाओं को शिविर के पश्चात् भी उक्त सेवाएं प्रसव होने तक नि:शुल्क उपलब्ध रहेंगी।

गीतांजली मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल

नेशनल हाईवे -8 बायपास, उदयपुर (राज.)
फोन : 0294-2500044

www.geetanjalihospital.co.in

शब्द रंजन

उदयपुर, सोमवार 01 फरवरी 2021

सम्पादकीय

गण, तंत्र और गणतंत्र

हमारे देश में हम सब गण, तंत्र और गणतंत्र की त्रिवेणी से बंधे हुए हैं। गण अर्थात् समूह यानी समाज के बिना अकेले का कोई अस्तित्व नहीं। कोई पहचान नहीं। कोई जीवन नहीं। व्यष्टि से समष्टि बनती है। समष्टि में ही व्यष्टि का महत्व आंका जा सकता है।

तंत्र हमारे कार्य करने की प्रणाली है। इस प्रणाली से हम चलायमान हैं। धीरे-धीरे तंत्र एक ढांचे विशेष में आबद्ध हो जाता है। बहुत से समाजों में ऐसे ढांचे से बंधे व्यक्ति नियमबद्ध सामाजिक सरोकारों से जुड़ते अपना अस्तित्व दिये रहते हैं। ये सरोकार लिखित नहीं, अलिखित होते हैं पर इनकी मर्यादा कोई लांघता नहीं। अलिखित होते हुए भी इनका असर अटूट होता है। इसमें समाज से निष्कासन, सजा, दण्ड और माफी तक का प्रावधान रहता है।

गणतंत्र एक शासन प्रणाली है जिसमें शासनाधीश गण अर्थात् जन यानी जनता द्वारा चुना जाता है। इसमें किसी व्यक्ति विशेष की दखल, फरमान अथवा हुकम नहीं होता है। एक सर्वस्वीकृत संविधान के अन्तर्गत राजकाज चलता है।

यही कारण है कि हमारे यहां अपनी मांगें मनवाने के लिए ज्ञापन देने, धरना देने, आन्दोलन करने, कोर्ट-कचहरी जाने, हड़ताल करने का वैधानिक अधिकार मिला हुआ है। किसान आन्दोलन इसी गणतंत्र का हिस्सा है। जो हमारे अधिकार हैं उसका हम उपयोग करें पर अपने कर्त्तव्यों का भी ध्यान रखें। देश पहले है। देश सर्वोपरि है।

एक समय वह था जब भारत विश्व-गुरु था और सोने की चिड़िया नाम से जाना जाता था। यही परम्पराशील देश है जहां प्राचीनतम सभ्यता और ज्ञान-विज्ञान की अनेक विधाएं, ग्रन्थ और शास्त्र रचे गये। हम ही उस परम्परा पर गर्व नहीं करते। विश्व के अन्य राष्ट्र भी हमारे प्रभाव तथा प्रभुत्व के कायल हैं।

इस गणतंत्र दिवस पर हम यही संकल्प लें कि हम अच्छे नागरिक सिद्ध हों ताकि हमारा राष्ट्र भी आदर्श गणतंत्र के रूप में अपनी छवि कायम कर सके।

पाठकों के पत्र

एक शब्द 'काकब' जो 50 वर्ष बाद पढ़ने-सुनने को मिला

शब्द रंजन पढ़ते यह अच्छा लगता है कि अनेक पुरानी स्मृतियां कौंध आती हैं। जिस आंचलिकता की पुट लिये अपने सम्बन्धों की स्मृतियों को डॉ. भानावत 'स्मृतियों के शिखर' में उजागर कर रहे हैं वह अपने आप में अलग से दस्तक लिये है। ये ही रंग भारतीयता की असली पहचान देते हैं। 15 दिसम्बर 2020 के अंक में 'रस-गुड़ की मिठास ही नहीं' में मुझे पचास वर्ष पुराने 'काकब' नामी गुड़-रस की स्मृतियां ताजी कर गईं। दरअसल अब बहुत कम लोग ही काकब शब्द और उसके रस-स्वाद से वाकिफ होंगे।

गन्ने का रस गुड़ बनाते समय गर्म होने की प्रक्रिया में उसका मध्य समय काकब गुड़-रस का होता है जो न गन्ने में रस की तरह पतला और न गुड़ की तरह गाढ़ा होता है। इसके स्वाद का तो पूछना की क्या। यह शहद जैसा काकब कई दृष्टियों से स्वास्थ्यकारी होता है।

डॉ. भानावत ने काकब का उल्लेख उनके उधर मेवाड़ क्षेत्र के सन्दर्भ में किया है पर हमारे मध्यप्रदेश में भी वही प्रक्रिया है, गन्ने के रस से गुड़ बनाने की। किसी भी लेखन की शैली और उसके कथन का मजा भी यही है कि पाठकों पर उसका असर कैसा होता है।

उल्लेखनीय है कि भानावतजी छोटीसादड़ी जैन गुरुकुल में सन् 1952 से 1954 तक छात्रावास में रहे मेरे छात्रजीवन के छात्रावास-साथी हैं। उसके बाद मेरी उनसे व्यक्तिशः भेंट मुझे याद नहीं पड़ती। उनकी लेखनी से तो हम तब भी प्रभावित थे। **-प्रो. शांतिलाल बांठिया, इंदौर**

विकल्प मेहता शिकागो में

उदयपुर (का. सं.)। बीकानेर में रह रहे डॉ. कविता-डॉ. सतीश मेहता के सुपुत्र विकल्प मेहता

(31) ने इलिनोय शिकागो विश्वविद्यालय से अनालिटिक्स विषय में मास्टर ऑफ साइंस बिजनेस का उच्च अध्ययन पूर्ण किया। विकल्प अध्ययनोपरान्त इन दिनों अपने गृहप्रांत राजस्थान आये हुए हैं। उन्होंने बताया कि विगत कुछ वर्षों में अनालिटिक्स विषय काफी चर्चित होने के कारण इसकी मांग और महत्व भी बढ़ा है। भारत से प्रतिवर्ष ही बड़ी संख्या में छात्र अध्ययन हेतु अमेरिका जा रहे हैं।

अध्ययनोपरान्त विकल्प ने वहीं की फोर काईट कम्पनी में मार्केटिंग अनालिटिक्स मैनेजर के पद पर सर्विस जोईन करली है। इससे पूर्व विकल्प ने दिल्ली से एम बी ए कर पांच वर्ष तक पेप्सी, सेमसंग तथा लावा इन्टरनेशनल में कुशलतापूर्वक अपनी सेवाएं दीं। उल्लेखनीय है कि विकल्प मूल रूप से उदयपुर जिले के बड़ीसादड़ी कस्बे के निवासी हैं।

गिनीज वर्ल्ड में लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ का चौथा रिकॉर्ड

उदयपुर (विज्ञप्ति)। मेवाड़ राजपरिवार के लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने चौथा वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है। मेवाड़ इससे पहले वस्त्रदान, स्टेशनरी दान और पर्यावरण संरक्षण के लिए 20 सैकण्ड में 4035 पौधे लगाकर तीन गिनीज ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड अपने नाम कर चुके हैं। लक्ष्यराज सिंह ने कोरोना महामारी के दौर में सिर्फ एक घंटे के समय में स्वच्छता के 12,508 प्रोडक्ट्स दानकर यह कीर्तिमान स्थापित किया है। यह अपने आप में एक अनूठी पहल पर आधारित रिकार्ड है। किशोरियों के लिए दान किए सेनेट्री पेड, हेंड सेनेटाइजर, साबुन, टूथब्रश जैसे प्रोडक्ट्स भी इस रिकार्ड की सूची में शामिल हैं। राज्यपाल कलराज मिश्र ने भी हाल ही में प्रशस्ति पत्र भेंट कर उन्हें सम्मानित किया है। एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर लक्ष्यराजसिंह बिजनेस में भी आगे रहकर यंग अचीवर फॉर प्रिजविंग हेरिटेज एण्ड प्रमोटिंग हॉस्पिटेलिटी अवार्ड हासिल कर चुके हैं।

गीताजंली में कोविड-19 टीकाकरण पर सीएमई का आयोजन

उदयपुर (विज्ञप्ति)। गीताजंली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल में कोविड-19 टीकाकरण पर सीएमई का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य प्रवक्ता वक्ष एवं क्षय रोग विभागाध्यक्ष डॉ एस.के. लुहाड़िया ने रीसेंट अपडेट्स ओन कोविड-19 टीकाकरण पर अपने विचार व्यक्त किये। कार्यकम में गीतांजली यूनिवर्सिटी के डीन एवं प्रिंसिपल डॉ. एफ. एस. मेहता, मेडिकल सुप्रीटेनडेंट डॉ. नरेन्द्र मोगरा, सी.ई.ओ प्रतीम तम्बोली, डॉक्टर्स एवं पी.जी. विद्यार्थियों ने सभी आवश्यक कोरोना प्रोटोकॉल्स का पालन करते हुए कार्यक्रम में भाग लिया7 डॉ. लुहाड़िया ने बताया कि आज पूरी दुनिया में लगभग 64 विभिन्न प्रकार की कोविड-19 वेक्सीन पर क्लिनिकल ट्रायल चल रही है। उनमें से 9 का उत्पादन भारत में होगा। अमेरिका व जर्मनी में विकसित फाइजर व मोर्डना कम्पनी की वैक्सीन 95 प्रतिशत प्रभावी पाई गई और कोई गम्भीर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पाये गये परन्तु उन वेक्सीन को -20 से - 80ए सेंटीग्रेट तापमान पर स्टोर करना पड़ता है।

भारत में सीरम इन्टीट्यूट द्वारा निर्मित कोविशील्ड वेक्सीन 70 प्रतिशत प्रभावी है और पूर्णतया सुरक्षित है। उसकी फेज-3 ट्रायल यू.के., ब्राजील व साउथ अफ्रीका में पूर्ण हो चुकी है और भारत में लगभग 1600 वालनटियर्स पर फेज-3 ट्रायल चल रहा है।

नारायण सेवा द्वारा राममंदिर निर्माण के लिए 11 लाख भेंट

उदयपुर (विज्ञप्ति)। दिव्यांगों की सेवा में समर्पित नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल एवं निदेशक वंदना अग्रवाल ने श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को भगवान राम के भव्य मंदिर

के निर्माणार्थ ग्यारह लाख रुपए दान स्वरूप नेता प्रतिपक्ष एवं उदयपुर विधायक गुलाबचंद कटारिया को भेंट किए। इस दौरान नगर निगम के महापौर जी एस टांक और उप महापौर पारस सिंघवी उपस्थित रहे। प्रशान्त अग्रवाल ने कहा कि प्रभु श्रीराम का मंदिर बनना हर भारतवासी के लिए गौरवपूर्ण है।

स्मृतियों के शिखर (116) : डॉ. महेन्द्र भानावत

चांदी की झील में लघुचित्रों को छविमान करते रहे वर्माजी

पुरुषार्थ जब सबल होता है तो भाग्य प्रबल होकर सोने में सुहागा जड़ता है। वर्माजी के साथ यह सौभाग्य अनेक बार जुड़ता गया। सन् 1974 में पहली बार वे राजस्थान ललित कला अकादमी से पुरस्कृत हुए तो यह सिलसिला जैसे लगातार उन पर सेहरे पर सेहरा चढ़ाते 1975, 1977, 1982 और 1984 तक शिखर-पर-शिखर मंडता रहा।

राजस्थान की सांभर झील में जन्मे जाये कन्हैयालाल वर्मा के लघुचित्र ऐसे लगते हैं जैसे चांदी की नमकीन झील में लघुचित्रों के चीड़ा-चीड़ी अपनी इन्द्रधनुषी रंगावलियों की छविमान रोशनियों में चहचहा रहे हैं।

यह सब अनायास नहीं है। वर्माजी ने एकबार मुझ से कहा भी, नीलवर्णा परम शक्तिवंता देवी शाकंभरी की ही कृपा रही कि सांभर में यहां के राजा को वरदान दिया कि बिना पीछे दृष्टि डाले सदैव अपनी निगाह को आगे रखते अपने घोड़े पर सवार हो जितनी दूर तक दौड़ लगा सको वहां तक की भूमि चांदी की रूपहली खान में परिवर्तित हो जाएगी।

देवीमां से यह सुनते ही राजा निहाल हो सकपका गया पर दूसरे ही क्षण उसे लगा कि इतनी भूमि जब चांदी की हो जाएगी तो मुझे कौन खुशहाल रहने देगा। मेरी परेशानी तब और अधिक बढ़ जाएगी। राजा ने देवी की इस महत्ती कृपा को शिरोधार्य करते निवेदन किया कि ऐसी स्थिति में इस भूमि का उपभोग कौन करने देगा।

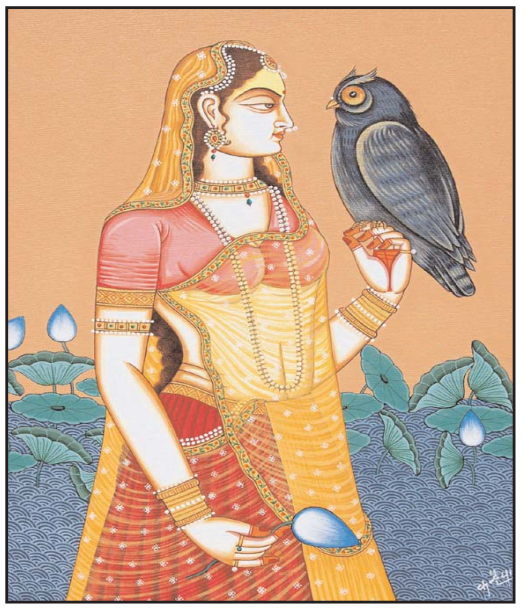

देवी ने तब उस झील को नमक के रूप में परिवर्तित कर दिया ताकि उसका वरदान भी प्रतीकात्मक भाव लिए जगजाहिर होता रहे। सांभर झील से जो भी गुजरता है, नमक का फैलाव देख लगता है जैसे पूरी झील में चांदी सी श्वेत स्फटिक लहरों वाला विशाल समुद्र सूरज की किरणों में नहाता अनेक रंगों की रोशनाई से सदाबहार बना हुआ है।

वर्माजी के साथ यह दुर्योग ही रहा कि उनके तेरह भाई-बहिन हुए किन्तु अन्त में वे ही अकेले रह गये तब वे अपने धुर बचपन में चूल्हे के पास बैठ कोयला लेकर आंगन में आंकड़-बांकड़ रेखाएं खींचा करते थे। पिताजी उन्हें ऐसा करते देख खुश होते। वे आराइश के शिल्पी थे सो समझते थे कि उनका बेटा उनकी रूचि के रास्ते पर ही अपनी कला की परख दे रहा है।

यों वे पूरे गांव तथा आसपास के क्षेत्र में तनसुखजी उस्ता के नाम से प्रसिद्धि लिए थे। फिर उन्होंने वर्माजी के लिए घर की दीवार का एक कोना ही निश्चित कर उन्हें कहा कि इधर-उधर चित्र कोरने की बजाय इस दीवार पर बनाया करना। इस प्रकार वर्माजी को दीवार का वह कोना क्या हाथ लगा, चित्रकला की जैसे एक अभ्यास पुस्तिका ही हाथ लग गई।

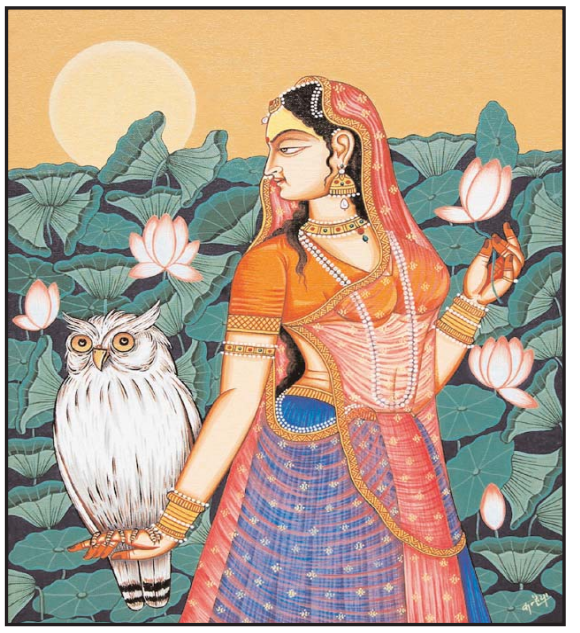

दीवार पाकर वर्माजी को बड़ा मजा आ गया। सोचा, चित्र बनाने का असली आनंद अब शुरू होगा। फलस्वरूप उन्होंने कोयले की बजाय हिरमिच, रामरज, सिन्दूर, नील, हींगलू, काजल, सीलू, खड़िया जैसे देशी रंगों का उपयोग करना शुरू किया। पिताजी ने उन्हें कूंची पकड़ाना भी सीखा दिया और साथ-साथ छोटी-बड़ी कलमें भी बनाने का शिक्षण दे दिया।

इसके लिए बकरी पहले से उनके घर में पल रही थी। उसका एक बड़ा प्यारा सा मेमना था। उसकी पूंछ को हल्की गीली कर छोटी कैंची से उसके बाल कतर ठीक से संवारे और चील के पंख की नली में डाल, बांस की एक खपच्ची को गोल-सी तराश दे उस नली को उसमें डाल दिया और कहा कि बड़ा ब्रश बनाने के लिए बालों की गुच्छी को सीधे ही खपच्ची से बांध दो।

बतादें, पहले सांभर चीलों के लिए भी जाना जाता था। वर्माजी ने चीलों के झुण्ड, ऊंचे आकाश में उनकी हवाखोरी, सामूहिक जीमण-चूंटण के दौरान मिठाइयों पर मारते उनके झपट्टे भी खूब देखे और उनका आघात भी सहा है। देखा यह भी कि किस प्रकार चील आदमी को चकमा देती उसके हाथ से मिठाई का दोना और यहां तक कि पत्तल तक उड़ाकर अपने तीखे पंजों की करारी झपट से व्यक्ति को अध घायल तक करती रफ्फूचक्कर हो जाती है पर अब तो चील सपने की बात हो गई है।

ऐसे और भी संस्कार वर्माजी के चित्रांकन में संगी बने हैं। अन्य गांवों की तरह सांभर में भी कभी ख्याल-तमाशे करनेवाले, कभी रामलीला करनेवाले, घर-घर स्वांग दिखानेवाले, नटों द्वारा रस्सी पर कमाल करने वाले, सर्कस वाले आकर खासा मनोविनोद करते।

वर्माजी मालियों के मंदिर के पास के एक बड़े चौक के झरोखेवाले अपने घर में बैठ यह सब देखा करते। इसका उनके मानस पर बड़ा प्रभाव रहता तब वे अपनी कलाकृतियों में भी उसका असर दिखाते। ऐसे लोकरंगी चितरावण कला उन्हें अधिक आकर्षण देती लगती। ऐसे करते-करते वे लघुचित्रण के गंभीर अन्वेषक और अध्येता के रूप में जाने जानेलगे।

07 मार्च 1943 को जन्मे कन्हैयालाल वर्मा ने अपने कला सृजन की आंच को कभी ठण्डा नहीं होने दिया। अध्यापन के दौरान तो वे और अधिक सक्रिय रहते ढोलामारू, वीर सतसई, बिहारी सतसई, वेलि किसन रूक्मणी री, रामायण, मेघदूत जैसे प्रख्यात ग्रंथों तथा लोकजीवन में चर्चित जसमा-ओडण, ढोला-मारू, मूमल-महेन्द्र, रूपमती-बाजबहादुर, आभलदे-खींवजी, तेजाजी, पाबूजी से सम्बन्धित आख्यान एवं राग कल्पद्रुम, मेघदूत तथा संस्कृत के श्लोकों का उनके आधार पर चित्रण करने की दृष्टि से बड़े मनोयोगपूर्वक अध्ययन करते रंग-रेखाओं के प्रभावी चित्रपट तैयार करते, अपनी स्वतंत्र निज पहचान बनाते रहे और जब-जब जहां-जहां कोई प्रदर्शनी लगती, कोई प्रतियोगिता होती, उसमें गहरी दिलचस्पी दिखाते पूर्ण तैयारी के साथ अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते।

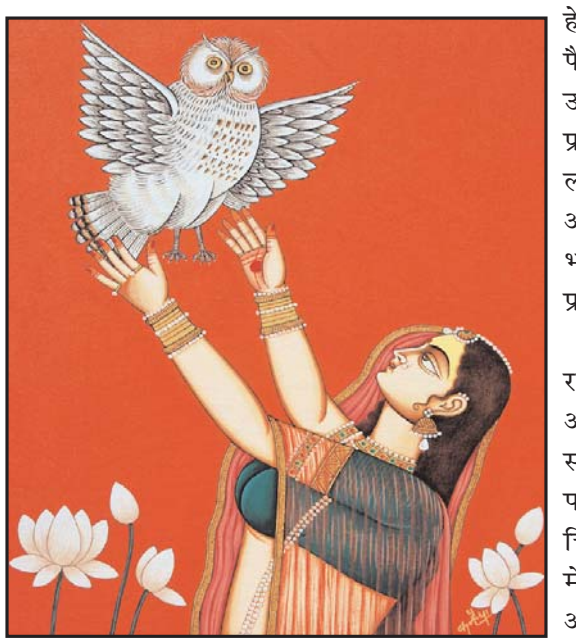

पुरुषार्थ जब सबल होता है तो भाग्य प्रबल होकर सोने में सुहागा जड़ता है। वर्माजी के साथ यह सौभाग्य अनेक बार जुड़ता गया। सन् 1974 में पहली बार वे राजस्थान ललित कला अकादमी से पुरस्कृत हुए तो यह सिलसिला जैसे लगातार उन पर सेहरे पर सेहरा चढ़ाते 1975, 1977, 1982 और 1984 तक शिखर-पर-शिखर मंडता रहा। यह देख प्रदेश के कलाकारों को लगा कि यदि वर्माजी ही भाग लेते रहे तो अन्य चित्रकार तो कभी अकादमी का द्वार ही नहीं देख पायेंगे। अकादमी ने भी तब ये पुरस्कार एक व्यक्ति को तीन बार से अधिक नहीं देने का नियम बना लिया।

ऐसे करते ढोलामारू काव्य के 50 दोहों को लेकर एक-एक दोहे पर एक-एक चित्र बनाते 50 चित्रों की आकर्षक श्रृंखला सजा दी। मेघदूत पर 26 चित्र बनाये। संगीत शास्त्र के अनुसार 3 राग 30 रागनियां मिलाकर 36 राग-रागनियों का पूरा सेट तैयार किया। ऐसे ही रामचरित मानस के सुंदरकांड को चित्रों में श्रद्धाभाव से अंकित किया। ऐसे चित्र तैयार कर उनके साथ संबंधित काव्य-पंक्तियां भी लिखदीं। उदाहरणार्थ -

जसु अपजसु देखत नहीं, देखत सांवल गात।
कहा करौं, लालच भरे, चपल नैन चलि जात।।
पिय कै ध्यान गही-गही, रही वही है नारि।
आपु-आपु ही आरसी, लखि रीझति रिझवारि।।
- (बिहारी सतसई)

सिंधु तीर एक भूधर सुंदर।
कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर।।
बार-बार रघुबीर संभारी।
तरकेउ पवन तनय बल भारी।
- (रामचरित मानस, सुंदरकांड -3)

ऊँ भूभुवरूं स्वरू तत्सवितुर्वरेण्यं,
भर्गो देवस्य धीमहि,
धियो यो नरू मचोदयात।।
- (ब्रह्मरूपा)

इस प्रकार कन्हैयालाल वर्मा ने साहित्य में अपनी अमर छाप अंकित करानेवाली शाश्वत कृतियों का आधार लेकर अपनी रंगरेजी तूलिका से एक-से-बढ़कर-एक शोभित आकृतियों का मंडान कर चित्रपट की तरह रंगमंडल का मुंह बोलता जड़ाव ही मुखर कर दिया।

राजस्थान में प्रचलित ख्याल तमाशों की जो हस्तलिखित तथा छपित पाण्डुलिपियां-पोथियां मिलती हैं उनमें भी रेखाचित्र मिलते हैं। ये चित्र यथा प्रसंग लघु आकार लिए बड़े ही मनोरम तथा आकर्षक होते हैं। ऐसे ही बम्बई के ज्ञानसागर छापाखाने की छपी हुई एक ख्याल-पुस्तिका संवत् 1965 की मेरे पास संरक्षित है।

यह राजा गोपीचंद भरथरी के ख्याल से सम्बन्धित है। ऐसे हस्तलिखित ख्यालों के गुटके भी मेरे देखने में आये हैं। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा मेघदूत पर चित्रांकन हेतु वर्माजी को फैलोशिप भी मिली। उन्होंने अनेक प्रदर्शनियों तथा लघुचित्रण शैली पर आयोजित शिविरों में भाग लेकर अपनी श्रेष्ठ प्रस्तुति दी।

उदयपुर स्थित राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं शिक्षण संस्थान में जब वे पाठ्य-पुस्तकों के लिए चित्रांकन हेतु आये तब मेरे से भी उनकी अच्छी भेंट हुई। उसके बाद तो वे प्रत्येक दीवाली पर अपने द्वारा निर्मित बहुत ही मनभावन तथा काव्य-ग्रंथों के प्रमुख संदर्भों पर आधारित शुभाकांक्षी चित्र मुझे भेजते रहे। यह दुर्योग ही रहा कि वे हमारे बीच अधिक समय नहीं दे पाये और 15 अक्टूबर 2015 को चल बसे। दीपावली अब भी आती है पर अब वर्माजी की मधुर स्मृति ही मुझे बेचैन किये उनके प्रति श्रद्धांजलि का एक दीप जलाकर रह जाती है।

स्पोर्टी, स्मार्ट रेनो 'काइगर' लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। अपनी शोकार को दुनिया के सामने प्रस्तुत करने से उत्पन्न शुरुआती उल्लास के बाद, ग्रुपे रेनो ने भारत में बेसब्री से इंतज़ार की जा रही रेनो काइगर को पेश किया। दुनिया के दूसरे देशों में पेश किए जाने से पहले भारत के लिए डिज़ाइन और विकसित की गई एक बिल्कुल नई कॉम्पैक्ट एस.यू.वी., रेनो काइगर भारत में रेनो द्वारा पेश किए जाने वाले परिवर्तनकारी उत्पादों की दिशा में सबसे नवीन उत्पाद है। डस्टर, क्विड और ट्राइबर के जैसे ही, रेनो काइगर भी अपने वर्ग के समीकरणों को बदले देगी और रेनो के लिए एक और हालातों को बदलने का दम रखती है।

वेंकटराम मामिलापल्ले, राष्ट्रीय मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं प्रबंध निदेशक, रेनो इंडिया ऑपरेशन्स ने बताया कि रेनो काइगर ने अपने अद्भुत डिज़ाइन के चलते पहले ही अपनी एक शानदार जगह बना ली है, जो कि एक बेहद दमदार व्यक्तित्व को दर्शाता है। रेनो काइगर को बहुत से स्पोर्टी और तगड़े तत्वों के साथ तैयार किया गया है और यह एक असली एस.यू.वी. के तौर पर अपनी जगह बनाती है। रेनो काइगर का स्मार्ट कैबिन टेक्नोलॉजी, कार्यक्षमता और खुली जगह का मिश्रण है।

फैब्रिस कैंबोलिव, एस.वी.पी., रेनो ब्रांड, सेल्स एवं ऑपरेशन्स ने बताया कि डस्टर, क्विड और ट्राइबर के बाद, अब हम एक आधुनिक एस.यू.वी., रेनो काइगर को भारतीय बाजार के हिसाब से एकदम सही है। काइगर में वो सबकुछ है जो रेनो पेश कर सकती है।

लॉरेन वैन डेन ऐकर, ई.वी.पी., हैड ऑफ़ डिज़ाइन, ग्रुपे रेनो ने कहा कि रेनो काइगर एक दमदार, तेज़-तर्रार और शालीन एस.यू.वी. है। इसे भीड़-भाड़ और बाहरी इलाकों में किसी भी तरह की सड़क पर आसानी से चलाने के लिए डिज़ाइन किया है। काइगर का ख़ास एक एस.यू.वी. जैसा रूप है और इसका लंबा व्हीलबेस अपनी सवारियों को शानदार जगह और वॉल्यूम प्रदान करना संभव बनाता है। इसके 'स्मार्ट केबिन' को खासतौर से मिल-जुलकर इस्तेमाल और सुविधा प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

'वर्ल्ड हेयर कप' में छाया कमलेश का 'जेंट्स फैशन प्रो कट'

उदयपुर (विज्ञप्ति)। उदयपुर के जाने माने जेंट्स हेयर कट स्पेशलिस्ट कमलेश सेन ने दुनिया के सबसे बड़े हेयर एंड ब्यूटी कांटेस्ट में चौथा स्थान हासिल कर ना सिर्फ देश बल्कि मेवाड़ का भी नाम रोशन किया है। कमलेश सेन ने विश्वस्तरीय ओमसी वर्ल्ड चैंपियनशिप की सात तरह की केटेगरी में हिस्सा लिया और 'जेंट्स फैशन प्रो कट' केटेगरी में दुनिया के 200 से अधिक दिग्गज हेयर कट स्पेशलिस्ट से मुकाबला कर चौथा स्थान हासिल किया। इसी केटेगरी में प्रभात फेमेली के पुष्कर सेन ने पांचवां स्थान प्राप्त किया है। कमलेश ने इस विश्वस्तरीय प्रतियोगिता में ऑल इंडिया हेयर एंड ब्यूटी एसोसिएशन (एआईबीएचए) के प्रतिनिधि के तौर पर हिस्सा लिया था।

कमलेश सेन ने बताया कि कोविड-19 वैश्विक महामारी के चलते हर 2 साल में होने वाली यह स्पर्धा इस बार ऑनलाइन ही आयोजित की गई थी। इसमें विश्वभर के कई देशों के प्रतिभागियों ने बिना एडिटिंग फोटो सेशन के माध्यम से हिस्सा लिया। इसके साथ ही कमलेश सेन को हाल ही में ओएमसी वर्ल्ड एसोसिएशन पेरिस द्वारा 'नेशनल हेयर ट्रेनर' के खिताब से भी नवाजा गया।

कमलेश ने बताया कि ओएमसी पांच महाद्वीपों के प्रतियोगियों को वैश्विक मंच प्रदान कर कंपीटीशन आयोजित करवाता है। यह 60 सदस्य देशों और दुनियाभर में 10 लाख से अधिक व्यक्तिगत सदस्यों के साथ दुनिया का सबसे बड़ा पेशेवर हेयर स्टाइलिस्ट संगठन है। कमलेश ने सफलता पर ऑल इंडिया हेयर एंड ब्यूटी एसोसिएशन (एआईएचबीए) की अध्यक्षा डॉ. संगीता चौहान, जनरल सेक्रेटरी अशोक पालीवाल, अलिशा मेम, एचबीओ स्टेट अध्यक्ष नीता पारिख एवं प्रभु सेन और आईबा टीम, एचबीओ राजस्थान टीम, एचबीओ उदयपुर टीम अध्यक्ष कनकसिंह, भारती सेन, मंजू शर्मा, शंभूलाल सहित उदयपुरवासियों को धन्यवाद दिया।

दुर्गेश सेन ने बताया कि चैंपियन सैलून की शुरुआत दिसंबर-2000 में हुई थी। तब से अब तक चैंपियन परिवार ने कई नए मुकाम हासिल किए हैं। डायरेक्टर दुर्गेश व जमनेश सेन हैं। चैंपियन परिवार के अनिल सेन ने इंडिया कप में ब्रांज मेडल प्राप्त किया। मलेशिया में भी लेडीज स्टाइल में अनिल ने चौथा स्थान प्राप्त किया। इसी टीम के विजय सेन एवं दीपक सेन ने इंडिया हेयर कप में जेंट्स हेयर कट में सिल्वर मैडेल प्राप्त कर उदयपुर का नाम रोशन किया।

एचडीएफसी बैंक की सीएससी के साथ साझेदारी

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एचडीएफसी बैंक एवं इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आईटी मंत्रालय (माइटी) के तहत स्पेशल पर्पज़ वैहिकल (सीएससी एसपीवी) - सीएससी ई-गवर्नेंस सर्विसेस इंडिया लि. ने संयुक्त रूप से देश में सीएससी-एचडीएफसी बैंक के बिज़नेस कॉरेस्पॉन्डैंट्स के लिए ईएमआई कलेक्शन सर्विसेस की घोषणा की। इसके द्वारा ग्राहकों को भुगतान करना आसान हो जाएगा और वे अपने नजदीकी सीएससी पर जाकर बकाया राशि जमा कर सकेंगे। सीएससी-एचडीएफसी बैंक कॉरेस्पॉन्डैंट या विलेज़ लेवल एंटरप्रेन्योर (वीएलई) लोन खाते का मिलान ग्राहक के रजिस्टर्ड फोन नंबर सेकर सिस्टम पर देय राशि को जाँच सकेंगे। इसके बाद वीएलई एकत्रित की कई राशि की रसीद प्रदान करेगा और निर्धारित प्रपत्र में राशि बैंक में जमा करेगा। यह साझेदारी 1 लाख से ज्यादा वीएलई के बैंक के नेटवर्क द्वारा बैंकिंग एवं फाईनेंशल सेवाओं को दूरदराज के इलाकों में रहने वाले लोगों के दरवाजे पर ले जाएगी।

यह घोषणा डॉ. दिनेशकुमार त्यागी, एमडी, सीएससी ई-गवर्नेंस सर्विसेस इंडिया लि., दिनेश लूथरा, नेशनल हेड, सीएससी चैनल, एचडीएफसी बैंक एवं देबज्योति दत्ता, हेड-कलेक्शन प्रोसेस (रिटेल पोर्टफोलियो मैनेजमेंट) द्वारा एचडीएफसी बैंक में की गई।

जेके टायर की बिक्री में वृद्धि

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लि. (जेके टायर) ने चालू वित्तीय वर्ष 2020-21 की तीसरी तिमाही के लिये शानदार वित्तीय परिणाम पेश किये हैं। इस दौरान कम्पनी की समन्वित बिक्री 26 प्रतिशत बढ़कर 2776 करोड़ रूपये की हो गई, जो कि अब तक की किसी भी तिमाही में सर्वश्रेष्ठ है। गत वर्ष की इसी तिमाही के मुकाबले में कम्पनी का ईबीआईटीडीए दुगना हो कर 507 करोड़ रूपये एवं कर पूर्व लाभ (पीबीटी) कई गुणा बढ़ोत्तरी के साथ 343 करोड़ रूपये का हो गया। एकल आधार पर समन्वित बिक्री 1851 करोड़ रूपये की, ईबीआईटीडीए 312 करोड़ रूपये के एवं कर पूर्व लाभ (पीबीटी) 196 करोड़ रूपये के रहे।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि जेके टायर ने तीसरी तिमाही में बिक्री व लाभप्रदता की दृष्टि से शानदार प्रदर्शन किया है। यह सब पैसेंजर, कामर्शियल के साथ साथ फार्म टायर्स में बढ़ती मांग के कारण संभव हो पाया है। तीसरी तिमाही के दौरान जेके टायर के सभी 9 संयंत्रों ने करीब करीब 96 प्रतिशत क्षमता पर काम किया। यह एक संतोष का विषय है कुछ संयंत्रों ने निश्चित लोबल बेंचमार्क आपरेटिंग पैरामीटर्स को भी हासिल किया।

होम फ्रूट एंड वेजी वॉश के प्रति बढ़ा रुझान

उदयपुर (विज्ञप्ति)। कोरोना काल ने लोगों की प्राथमिताएं तथा आदतें बदल दी हैं। अब वे हर क्षेत्र में उन्हीं वस्तुओं व सेवाओं का चयन कर रहे हैं जो स्वास्थ्यवर्धक हैं। होम फ्रूट एंड वेजी वॉश सेवाओं के प्रति लोगों का रुझान बढ़ा है। ये विचार देश की अग्रणी एफएमसीजी डायरेक्ट सेलिंग कंपनी एमवे इंडिया के सीईओ अंशु बुधराजा ने व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि होम फ्रूट एंड वेजी वॉश के साथ ही होम केयर कैटेगरी में भी रुझान बढ़ा है। घरों में आने वाली सब्जियों और फलों की सफाई के लिए काम में आने वाली सभी डिवाइसों की खूब बिक्री हो रही है। नई डिवाइस के उपयोग से क्लोरीन, ब्लीच, अल्कोहल, कृत्रिम रंग या किसी भी पशु-आधारित तत्व को आसानी से हटाया जा सकता है। विशेषज्ञ अजय खन्ना ने बताया कि कीटनाशकों के खिलाफ वैज्ञानिक रूप से प्रयोगशाला में जांचे-परखे गए प्रोडक्ट उपलब्ध हैं जो फलों, सब्जियों व अनाज से गंदगी और धूल को साफ करने के साथ सतह के कीटाणुओं (बैक्टीरिया और कवक), सतह के कीटनाशकों, मोम व सतह की भारी धातुओं को हटाने में पूर्णतया असरदार साबित हुए हैं। खास बात यह है कि ये कोई अवशेष भी नहीं छोड़ते।

इंडिया शेल्टर ने जीता अवार्ड

उदयपुर (विज्ञप्ति)। इंडिया शेल्टर फाइनेंस कॉर्पोरेशन लि. को हाल ही में नई दिल्ली, सचिवालय में इनक्लूसिव फाइनेंस इंडिया अवॉर्ड्स के लिए 'हाउसिंग फाइनेंस कंपनी लेंडिंग फॉर अफोर्डेबल हाउसिंग अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया है। इंडिया शेल्टर फाइनेंस कॉर्पोरेशन ने कम आय वाले परिवारों को किफायती ऋण प्रदान करने की दिशा में सफलतापूर्वक काम किया है। ये वर्ग अक्सर किफायती दरों पर आवास ऋण प्राप्त करने की सुविधा से वंचित ही रह जाता है। 'हाउसिंग फाइनेंस कंपनी लेंडिंग फॉर अफोर्डेबल हाउसिंग अवॉर्ड', अवॉर्ड का चयन, संगठन की पहुंच, एसेट गुणवत्ता, विकास और सुरक्षित और बेहतर घरों तक पहुंच प्राप्त करने में उनकी मदद करके देश के सुविधाओं से वंचित वर्गों के विकास के प्रति प्रतिबद्धता पर आधारित था।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी अनिल मेहता को केन्द्रीय राज्य मंत्री अनुराग ठाकुर, माननीय वित्त और कॉर्पोरेट मामले, भारत सरकार द्वारा सम्मानित किया गया।

मैक्स बूपा हेल्थ इंश्योरेंस का राजस्थान में विस्तार

उदयपुर (विज्ञप्ति)। भारत की प्रमुख स्टैंडअलोन हेल्थ इंश्योरेंस कंपनियों में से एक मैक्स बूपा ने उदयपुर और राजस्थान के बाजारों में अपनी विस्तार योजनाओं की घोषणा की।

मैक्स बूपा हेल्थ इंश्योरेंस के डायरेक्टर (रिटेल) अंकुर खरबंदा ने कहा कि कंपनी ने उदयपुर में अपनी अतिरिक्त शाखा खोली है और इसका मकसद अगले पांच सालों में 13,000 लोगों को हेल्थ इंश्योरेंस के दायरे में लाना है। मैक्स बूपा के ग्राहकों को शहर में 14 नेटवर्क अस्पतालों और देशभर में 6000 से अधिक अस्पतालों में कैशलेस इलाज की सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। उन्हें, 30 मिनट के भीतर कैशलेस क्लेम्स की पूर्व मंजूरी जैसे लाभों तक भी पहुंच मिलेगी और इस तरह क्वालिटी हेल्थअकेयर को और सुलभ बनाया जाएगा। खरबंदा ने कहा कि सर्वेक्षण में यह बात सामने आई कि उदयपुर में हेल्थ इंश्योरेंस को लेकर काफी मांग है। इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए अधिक लोगों को स्वास्थ्य बीमा के दायरे में लाने के लिए मैक्स बूपा ने उदयपुर और राजस्थान के अन्य बाजारों में अपनी मौजूदगी का विस्तार किया है। कंपनी का मकसद शहर में विभिन्न पहलों के माध्यम से स्वास्थ्य बीमा के बारे में और अधिक जागरूकता फैलाना है।

उदयपुर में मंत्री खाचरियावास ने फहराया राष्ट्रीय ध्वज

उदयपुर (विज्ञप्ति)। उदयपुर संभाग मुख्यालय पर राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस 2021 का मुख्य समारोह गांधी ग्राउण्ड में उत्साह एवं सादगी के साथ मनाया गया। मुख्य अतिथि जिले के प्रभारी एवं परिवहन

व सैनिक कल्याण मंत्री प्रतापसिंह खाचरियावास ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और परेड का निरीक्षण कर शुभकामनाएं दीं।

इस मौके पर अतिरिक्त जिला कलक्टर (प्रशासन) ओ.पी. बुनकर ने महामहिम राज्यपाल का संदेश पठन किया। कार्यक्रम के दौरान चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की ओर से कोरोना जागरूकता पर आधारित झांकी निकाली गई। समापन स्थानीय शिक्षिकाओं द्वारा राष्ट्रगान के साथ हुआ।

ज़िंक में ध्वजारोहण :

हिन्दुस्तान ज़िंक के प्रधान कार्यालय में मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरूण मिश्रा ने ध्वजारोहण किया। उन्होंने कहा कि देश को आगे बढ़ाने और सुचारू रूप से चलाने के लिए संविधान की आवश्यकता थी जो सभी जाति, धर्म, वर्ग के लोगो को समान रूप देखे और देश को प्रगति के पथ पर ले जा सकें। हमारे संविधान को बनाने वालों ने हमें सही राह पर चलने के लिए मार्गदर्शन दिया है। यह हम सब की जिम्मेदारी है कि हम इसके प्रति अपनी सच्ची श्रृद्धा से पालना करते हुए देश को आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका निभाएं। इस अवसर पर ज़िंक की चीफ पीपुल ऑफिसर सुश्री कविता सिंह सहित कर्मचारी, अधिकारी एवं उनके परिजन उपस्थित थे।

विद्यापीठ में झंडारोहण :

जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय की ओर उदयपुर, प्रतापनगर, डबोक परिसर में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने झंडारोहण कर एनसीसी परेड की सलामी ली। प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि बीते 71 वर्षो में हमने अनेक क्षेत्रों में उपलब्धि हासिल की है लेकिन अभी भी ऐसे कई लक्ष्य हैं जो बहुत दूर हैं। हमें कभी नही भूलना चाहिए कि गणतांत्रिक व्यवस्था में बेहतर गण से ही बेहतर तंत्र का निर्माण होता है लिहाजा हम जब भी ऐसा कुछ करते हैं जो एक नागरिक के रूप में हमारे कर्तव्यों व सिविल सेंस के खिलाफ हो तो कहीं न कहीं हम उन भावनाओं को चोट पहुंचा रहे है जो गणतंत्र की मजबूती व सफलता के लिए जरूरी है।

नारायण सेवा में झण्डारोहण :

नारायण सेवा संस्थान के सभी परिसरों में गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया

गया। मानव मंदिर में पद्मश्री कैलाश मानव व अंकुर कॉम्प्लेक्स में प्रशांत अग्रवाल ने झंडारोहण किया। इस अवसर पर सहसंस्थापिका कमलादेवी अग्रवाल, निदेशक वंदना अग्रवाल, पलक अग्रवाल मौजूद थे। लियो का गुड़ा परिसर में अनिल आचार्य व बलीचा स्थित सेवा परमो धर्म ट्रस्ट में कल्पेश मेघवाल ने तिरंगा फहराया।

सीए में उदयपुर की बेटियां अव्वल

उदयपुर (विज्ञप्ति)। पूरे विश्व में अपनी पहचान का परचम लहरानेवाले उदयपुर का भाग्योदय शिक्षा के क्षेत्र में भी अव्वल बनता जा रहा है। हाल ही के सीए परीक्षा में बेटियों ने बाजी मारकर कमाल दिखाया है।

इनमें सबानाथ ने ऑल इंडिया परीक्षा परिणाम में 34वीं पोजीशन प्राप्त करने का रेकॉर्ड कायम किया है। सबानाथ ने बताया कि दस घंटा नियमित अध्ययन कर उसने यह मुकाम हासिल किया जिसका श्रेय उसकी माता सलमा तथा पिता जावेद नाथ को है जिन्होंने पठनार्थ सारी सुविधाओं का ख्याल रखा।

इसी प्रकार सलोनी लसोड़ ने डूंगला जैसे गांव में जन्म लेकर दादा कालूलाल तथा पिता-माता विनोद-जतन का लाड़ला सान्निध्य पाकर अपनी पढ़ाई में ही पूरा चित्त लगाया। उसने बताया कि सीए भाई आलोक तथा बैंक में सेवारत भाभी मेघा और बड़ी मां मीनाक्षी से भी उसने आत्मीय प्रेरणा ग्रहण की।

शब्द रंजन परिवार की ओर से इन होनहार बेटियों को बधाई एवं भावी जीवन के सुखद उत्कर्ष की मंगल कामनाएं।

विजेताओं की घोषणा

उदयपुर (विज्ञप्ति)। टेक्नो ने भारत में अपने परिचालन के चार वर्षों से कम समय में 8 मिलियन ग्राहक पाने की उपलब्धि हासिल कर ली है।

अपने जश्न के हिस्से के तौर पर टेक्नो ने पिछले वर्ष नवंबर में आयोजित ग्रेट टेक्नो फेस्टिवल के भाग्यशाली विजेताओं की घोषणा की है। इसमें वडोदरा के लीलाबेन रोहित ने मारुति एस-प्रेसो कार जीती और वडोदरा, सोनितपुर, पटियाला, फिरोजाबाद और भीलवाड़ा के 5 अन्य ग्राहकों ने हीरो पैशन प्रो मोटरसाइकल्स जीती। 500 से ज्यादा ग्राहकों ने 10 कैमॅन 15 स्मार्टफोन्स और स्टाइलिश टेक्नो हाइपॉड्स एच2 ईयरबड्स जीते।

जे.के.टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)

गणतंत्र दिवस
के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

JK TYRE & INDUSTRIES LTD.

SELECTED Superbrand INDIA 2009-10 CONSUMER VALIDATED

PIMS हॉस्पिटल, उमरड़ा

हमारे सुपरस्पेशियलिस्ट रखें हर पल आपके स्वास्थ्य का खयाल...

सुपरस्पेशियलिटी सुविधाएं

- कार्डियक केयर सेन्टर
- न्यूरो सर्जरी
- नेफ्रोलोजी
- जनरल मेडिसिन
- टी.बी. चेस्ट एवं श्वास रोग
- प्रसूति एवं स्त्री रोग
- हड्डी एवं जोड़ रोग
- कैंसर सर्जरी
- यूरोलॉजी
- गेस्ट्रोएंटरोलॉजी
- पीड्रियाट्रिक सर्जरी
- मनोरोग चिकित्सा
- नेत्र रोग
- पेन मैनेजमेन्ट क्लिनिक
- न्यूरोलॉजी
- प्लास्टिक एवं बर्न सर्जरी
- जनरल एवं लेप्रोस्कॉपिक सर्जरी
- नाक, कान, गला रोग
- बाल चिकित्सा
- त्वचा एवं चर्म रोग
- दंत चिकित्सा

BECAUSE YOUR HEALTH MATTERS AT ANY AGE

जनरल स्पेशियलिटी सुविधाएं

14.50 लाख से अधिक मरीजों का सफल उपचार | 800 बेडेड हॉस्पीटल | 70 बेडेड आई.सी.यू. | 18 बेडेड डायलिसिस युनिट | 16 ऑपरेशन थियेटर

आमजन हेतु उपलब्ध सरकारी सुविधाएं — आयुष्मान भारत महात्मा गांधी राजस्थान स्वास्थ्य बीमा योजना | ESI राज्य कर्मचारी बीमा के अन्तर्गत उपचार | राजस्थान एड्स कन्ट्रोल सोसायटी | परिवार नियोजन एवं जननी सुरक्षा योजना | डॉट्स टी.बी. एवं क्षय रोग

रोगियों के लिए नि:शुल्क बस व एम्बुलेंस सुविधा उपलब्ध है– सम्पर्क करें : 9587890137

डायग्नोस्टिक विश्वस्तरीय मशीनों द्वारा जांच व निदान, MRI (1.5 T), CT-Scan (128 Slice), CD4 Count की सुविधा उपलब्ध, अल्ट्रासाउण्ड, इको कार्डियोग्राम, एलर्जी टेस्ट (Phadia 100), Hb-Vario (HPCL), ADVIAXP (CLIA), TB-PCR (Gene Xpert),NABL द्वारा मान्यता प्राप्त VIROLOGY LAB

▸मोड्यूलर ऑपरेशन थियेटर ▸आई.सी.सी.यू. ▸आई.सी.यू. ▸पी.आई.सी.यू. ▸एन.आई.सी.यू. ▸कोविड आई.सी.यू. ▸आइसोलेशन वार्ड ▸बर्न आई.सी.यू. ▸ब्लड बैंक

साई तिरूपति विश्वविद्यालय, उमरड़ा, उदयपुर

अम्बुआ रोड़, उमरड़ा, उदयपुर (राज.) 313015 Phone: 0294-3510000, Mob. 8696440666

Email: info@pacificmedicalsciences.ac.in
Web: www.pacificmedicalsciences.ac.in

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।